30-5-67 30-5-67 ओम शान्तिः रात्री क्लास

नये-2 बच्चो से भी मिलन होता जा रहा है। दिन प्रति दिन फैमली बडी होती जा रही है। फैमली मे होते ही है माँ-बाप भाई-बहन। बच्चो की बुधी मे अब बैठा है कि कल्प पहले जब बाबा आया था तब भी ऐसे ही यह फैमली इकठी हुई थी। हर कल्प बाप से मिलते है और पुरषार्थ कर बाप से वर्सा लेते है। सिर्फ बाप को याद करना है। ज्ञान की पुआईन्टस धारन करना तो बहुत ही सहज है। ऐसे नही कि कोई बहुत बडा सबक दिया जाता है। मनुष्य तो सारी रामायण गीता आद कण्ठ कर लेते है। यहां तुमको क्या धारन करना है। अल्फ और बे बस। यह भी जानते हो कि जो-2 दिन बीतता है वो ड्रामा में नूंधहै। सारा चक्र बुधी मे है। बच्चो को थोडी तकलीफ सिर्फ होती है तो बाप को याद करने मे। बाप मिला निश्चय हुआ। बाप ने समझाया है कि बच्चो तुम तमोप्रधान बन गये हो अब सतोप्रधान बनने लिये सिर्फ बाप को याद करना जरी है। इसलिये ही गाया जाता है तुमरी गत मत न्यारी। यह मत कोई के पास होती ही नही है। सिर्फ याद करो पवित्र बनो और बस अब अपने घर चलो नालेज पुरी हुई। सो भी बच्चे जानते है कि हर 5000वर्ष बाद बाप से वर्सा लेते है। इतनी अच्छी बाते भला भुलनी क्यो चाहिये। धारना भी कोई करना लम्बी चौडी नही है। सिर्फ 84का चक्र याद करना है ओरवर्ल्ड की हिस्ट्री जागाफी बुधी मे घुमानी है। बाप को याद करना है और 84के चक्र को याद करना है। कितना सहज है। भक्ति मार्ग मे कि तेन लम्बे-चौडे मन्त्र मिलते है। बाप तो कोई मन्त्र भी नही देते है। सिर्फ बाप को याद करना है जिससे ही हर कल्प वर्सा मिलता है। उतरती कला मे 84जन्म लेते है फिर चढ़ती कला मे देरी नही लगती है। बाप आकर सबको वापस ले जाते है। बुलाते भी है कि बाबा आकर पावन दुनियां मे ले चलो। बाप भी जानते है कि हमको आकर सभी बच्चो को वापस ले जाना है। लाखो वर्ष की तो बात ही नही। कल तुमको बादशाही देकर गये थे। अब फिर देने आये है। जो बीते उनका फिर कोई चिन्तन नही करना है। ड्रामा पास हुआ फिर खलास। ऐसे नही कि ऐसा होता था तो.... बीती सो बीती। चिन्तन नही करना होता है। ड्रामा की पटी पर चलना है। पास्ट का चिन्तन नही करना है। बच्चो को मालूम है कि विनाश होना है। इस छीछी दुनियां मे क्या रखा है। तुमको कितनी समझ है। बाप पढ़ाते है। बाप को कहा जाता है श्री-2। श्रेष्टते श्रेष्ट बाबा श्रेष्ठ बनाने वाले है। सभी बच्चे बनेंगे जरूर। फिर जो जितना पुरषार्थ करते है उतना ही बनते है। बच्चो को पुरषार्थ करना है कि हमारी राजधानी स्थापन हो जावे। हाथ मे कोई हथियार आद कुछ भी नही है। तुम्हारी है ही गुप्त सेना। कितनी प्रदर्शनियां तुम करते हो समझाते हो फिर भी समझते थोडे ही है। बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे है। परमपिता परमात्मा ने तो जरूर नई दुनियां ही रची होगी। आज से 5000वर्ष पहले इन देवताओं की राजधानी थी। शिव बाबा कहते है कि सारा दिन बाबा-बाबा-बाबा करते रहो। बाबा कहते है कि मुझे याद करो और बादशाही लो। और कोई तकलीफ नही है। सबको यही पैगाम देना है कि बाबा कहते है कि मुझे याद करो तो विष्णु पुरी का मालिक बन जावेंगे। एक ही बाप मैसेज देते आये है कि मुझे याद करो। मै भी इस शरीर का आधार लेकर तुमको कहता हूं। फिर इसमे मूंझने की बात ही नही है। जानते हो कि कल्प-2 ऐसे बाप से वर्सा लेते है। बाबा आया हुआ है अब नई राजधानी स्थापन हो रही है। समझाते है ना कौनसा बाप बात करते है। रूहानी बाप। सब आत्मीय स्तुति है। बाप कहते है किपड सब भुलते क्यो हो? बहुत सहज बाते है समझाने की। कोई तकलीफ तो है नही। जितना पुरषार्थ कल्प पहले किया होगा वो दिखाई पड़ता है। स्कूल मे पता पड़ता है ना। अपने अन्दर मे देखना है। बुरा कैक्टर है तो उसको अच्छा करते जाओ। अच्छे-2 दैवी-गुण धारन करने है। फिर वहां पर जाकर राजाई करेंगे। कैसे सोने हीरे के महल बनावेंगे। अनगिनत धान होता है। तुमको तो नशा रहना चाहिये कि अनेक बार बाप से राजाई ली है। इसके लिये ही कहा जाता है कि अतिइन्द्रय सुख गोप-गोपियों से पूछो। अच्छा बच्चो से अब गुड नाईट